भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-12, अंक-1 बुधवार, 25 जन.' 89	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

3 फरवरी.....

3 फरवरी.....आध्यात्मिक इतिहास के सुवर्ण युग का कभी न भूले जाने वाला परम महामंगलकारी दिन....हम सभी जानते हैं कि 1952 में इसी दिन ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने गुणातीत बगीचा अपने लाडले,शूरवीर व तेजस्वी चैतन्यपुरुष प.पू. काकाजी के हाथों सौंपकर निश्चिन्तता की सांस ली। प.पू. काकाजी ने उस बगीचे के माली बनकर हर पौधे को अपने खून से सींचा और उस बगीचे के फूलों को पूर्णरूप से खिलता रूप देकर गुणातीत अस्मिता का खानदानी नूर दिया। ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को 'आध्यात्मिक बुलडोजर' के रूप में चुना। सिंहनी का दूध स्वर्णपात्र में ही टिक सकता है न?

कई बार हमने प.पू. काकाजी के मुख से सुना है, एक दावे से–**'मैं साक्षात्कार करा हुआ पुरुष हूँ....'** अपनी स्थूल देह छोड़ने से पहले आखिरी साक्षात्कार दिन 26 जनवरी 1986 को विद्यानगर में वह बोले **'मेरा साक्षात्कार 'दृष्टा स्थापित हुआ' की बात नहीं। वह मन, बुद्धि, चित्त, अहम् व प्राण का दिव्यता में टोटल रूपान्तर का साक्षात्कार है इसलिए ही यह जंग खेला है और उसमें विजयी हुआ हूँ।'** ऐसी दावेपूर्वक की बात वही कह सकता है जिसने हकीकत में साक्षात्कार किया हो। फिर उन्होंने वह 'प्राप्ति' केवल स्वयं के लिए नहीं रखी, बल्कि गुरुदेव योगीजी महाराज के पास उसी पल अन्तर से याचना की कि अक्षरधाम के परम सुख, शान्ति, आनंद की जो अनुभूति मुझे कराई है, वही अनुभूति मेरे संबंध में आये व आने वाले हरेक को हो....भले ही भक्त को भेददृष्टि होगी पर प.पू. काकाजी तो जीवमात्र के सच्चे सुहृद बनकर उसे सहायरूप होने सदैव तत्पर रहे कभी थके नहीं....भक्तों के दुखों को टालने, उन्हें बाहरी व आत्मिक रूप से सुखी करने की एकमात्र निःस्वार्थ परोपकार की ही भावना.....'मेरे बारे सब क्या सोचेंगे?' यह विचार से परे.....केवल मात्र एक 'संबंध'....अरे ! स्वजन, आत्मीयजन यहां तक कि निजी सेवक भी कई बार उनकी बाहरी क्रिया को समझ न पाने के कारण मनुष्यभाव-मायिकभाव में फंस जाते व उनकी उपेक्षा भी कर देते, पर वह

महायोगी बिना भावफेर किये–बिना अपने संकल्प से तनिक भी विचलित हुए अपने गुरु की शान बढ़ाने हरेक का परम सुहृद सखा-मित्र बनकर अविरत निस्खलित धोध में स्नान कराता ही रहा... कैसा समुद्र से भी अत्यधिक विशाल हृदय–सौहार्द व उदात्त भावना....!

प.पू. काकाजी निरपेक्ष, नितान्त निःस्वार्थ प्रेम की जीवंत, मंगलकारी हितकारी मूर्ति थी। उनका जीवन ज्ञान, भक्ति, कर्म का समन्वय था। खूब समर्थ होते हुए भी एक सेवक के भी सेवक की अदा से जीये। कैसे भी विपरीत संजोगों में भी कभी उदास, निराश, क्षुब्ध, विचलित दिखाई नहीं पड़े। अपना बड़प्पन हमेशा छिपाये रखा। जिस-जिस ने उस दिव्य मूर्ति को देखा है उन्होने सुना ही है–'मैंने कुछ नहीं किया....सब योगीबापा ने किया है।' इससे भी अधिक, यश इन्होंने कभी अपने अकेले के हक में नहीं रखा ! वे हमेशा बोलते थे–**'यह काम अकेले हाथ नहीं हुआ। धन्यवाद हो मेरे साथीदारों को– प.पू. पप्पाजी..., बा..., बेन..., हरिप्रसादस्वामी..., अक्षरविहारी..., साहेब..., हरिभाई..., रमणीक..., पोपट..., रायशी...'**

इस गुणातीत समाज की हरेक प्रवृत्ति के प्रेरक, संचालक होते हुए भी सदा परदे के पीछे रहकर काम करते रहे–स्वयं ने गालियां खाई, अपमान सहा परन्तु मान के हार तो उन्होंने दूसरों के गले में ही पहनवाये। बिना अपेक्षा रखे जिनके लिए उन्होंने खूब परिश्रम किया....उन्होंने भी उनकी उपेक्षा की पर प.पू. काकाजी की मस्ती, मुख से स्मित कभी नहीं गया। उनके द्वारा कितने चमत्कार हुए, पर प्रभु का आभार मानकर, अपनी हस्ती गिने बिना गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति स्वामीसेवक भाव का रिश्ता, भक्ति अदा करने भरसक प्रयत्न करते रहे। धन, धाम, कुटंब, परिवार, महत्वाकांक्षा, कीर्ति व लौकिक-अलौकिक सिद्धियों–सर्वस्व को गुरुचरण में समर्पित कर दिया। यहीं पर अपने कार्य की समाप्ति नहीं की, बल्कि अंतःकरण की उदार आत्मीयता से सबके कल्याण के लिए विडम्बनाओं मुश्किलों व अनेक यातनाओं को सहन करके स्वयं का सुख सबको बांटकर खुद दुःख के भागीदार बनना ही पसंद करा। आखिरकार भेद-दृष्टि को मिटाकर–भक्तों में निर्दोष बुद्धि, सुहृदभाव, भावात्मक एकता लाने अपनी स्थूल देह की भी आहुति दे दी। कैसी प्रीति होगी उनकी हमारे प्रति????? सुहृदयता, सहिष्णुता के अजोड़ आदर्श रूप सम्राट को हमारे करोड़ों वंदन....

वे जब स्थूल रूप से हमारे बीच थे तब हम सबको 'गुणातीत भाव' में सहज रहने की सरल रीतें बताते ही रहे....बताते ही रहे....सुबह छः बजे से–हाथ में शेविंग मशीन लेते ही बातें करने की जो शुरूआत करते.....रात को ग्यारह–साढ़े ग्यारह बजे तक बिना विश्राम किये लगातार उनकी 'स्वामिनारायण महामंत्र' की धून्य, ध्यान, वचनामृत और स्वामी की बातें... माहात्म्यभरी बलभरी परावाणी बहती ही रहती... चाहे सुनने एक ही क्यों न बैठा हो? चाहे उनकी बात किसी ने सुनी-अनसुनी क्यों न कर दी? यहां तक कि कभी किसी ने उनकी उपेक्षा भी क्यों न कर दी हो, पर वह बोलते ही रहे.....बोलते ही रहे.....बापा के मूलभूत सिद्धान्त संप, सुहृदभाव एकता-भावात्मक एकता, दिव्य एकता में ले जाने निरंतर अनुरोध करते ही रहे, अपनी देह की, दिन की, रात की परवाह किये बिना ! पर कई बार अपने मन, बुद्धि, चित्त, अहम्, इन्द्रियां व अन्तःकरण के दायरे में रहकर उस अजोड़ विभूति की हमने अवहेलना भी करी। आश्चर्य तो यह है कि हमारी उस अवहेलना को भी उन्होंने हमारी नादानी जानकर वे हर बार माफ करते रहे.....'अब तक का–इस घड़ी तक का सब

माफ.....दुबारा नया प्रारब्ध मत खड़ा करना.....मैं नई चाबी दे जाता हूं, पर तुम चाबी खो मत देना। यूं कहकर वे हमें यूं भी टोकते कि तुम लोग चाबी खो ही देने वाले हो। और हम भी हर बार चाबी खो देते ! फिर भी वे हमारा बचपना-नादानियाँ कहो या लापरवाही निभाते रहे.....निभाते ही रहे। आखिर उन्होने स्थूल रूप से हमारे बीच में से छलांग मार दी। परन्तु हमारे प्रति एक अनोखी प्रीति के कारण वह सशक्त व्यक्तित्व सर्वत्र, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वोपरि, सर्वज्ञ, अंतर्यामी हमारे हृदय में जैसा था वैसा मौजूद रहा है।

उनके इतना अधिक समझाने के बाद भी हमें यह प्रश्न उठता है कि प.पू. काकाजी हमसे क्या कराना चाहते थे? वह इस छोटे से प्रसंग से स्पष्ट होता है–कुरुक्षेत्र में आयुर्वेदिक फार्मेसी–प.भ. गुलजारीलाल नंदाजी ने प.पू. काकाजी को चलाने के लिए सौंपी। फार्मेसी में लगातार घाटा ही जा रहा था, जिससे नंदाजी पूरे थके जैसे थे। गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को एक बार कहा था कि 'नंदाजी का ध्यान रखना।' प.पू. काकाजी ने आखिर तक अपने गुरुदेव में वचन को पाला। प.पू. काकाजी जब-जब दिल्ली आते, चाहे कितने भी व्यस्त क्यों न हो, समय का भी खूब अभाव हो, परन्तु किसी भी तरह प.भ. नंदाजी को मिलने जाते। कई बार भक्तों को प.पू. काकाजी की यह क्रिया जँचती भी नहीं, परन्तु प.पू. काकाजी की एकमात्र दृष्टि केवल अपने गुरु के वचन की ओर थी।

प.पू. काकाजी ने पांच साधक मुक्तों को फार्मेसी में रखा। काफी वर्षों से फार्मेसी घाटे में ही जा रही थी, सो काम करने वाले साधक मुक्तों ने प.पू. काकाजी के पास फरियाद करी कि यह फार्मेसी चलने वाली नहीं, बल्कि और अधिक घाटा देगी... करा हुआ परिश्रम व लगाये हुए पैसे बेकार जायेंगे... प.पू. काकाजी ने साधक मुक्तों को उत्तर दिया–**'फार्मेसी चले या न चले, चाहे लाखों रुपये का फायदा करे या नुकसान करे–उसकी मुझे तनिक भी परवाह नहीं; पर यहां तुम पांच जो हो वे सुहृदभाव-एकता से वर्तते हो जाओ इसलिए ही यह फार्मेसी हाथ ली है मैंने। यह तुम करने लग जाओ तो मैं नुकसान को भी फायदा मानूंगा।'** प.पू. काकाजी की हम सबसे कैसी अनुपम प्रीति होगी? कैसी ऊँची कक्षा पर हमें वह ले जाना चाहते होंगे जो कि ऐसे नुकसान की भी इन्होंने गिनती नहीं की ! चैतन्यों की सम्पूर्ण प्रगति, आत्मा के विकास के लिए कैसा उनका छिपा परिश्रम ! हम मायिक दृष्टि वाले, अपने ही तंत्र में लिपटे उनकी चिदाकाश दृष्टि को कहां पहचान पाते? उनके स्थूल रूप में होते हुए हम बोलते जरूर थे कि उन्हें भौतिक उपलब्धियों, कीर्ति, कांचन, कामिनी का तनिक भी भार नहीं, पर अब वही बात दिल की सच्चाई से महसूस करते हैं.....अपने संबंध में आयी हुई चेतनाओं को खूब ऊंची, अपने जैसी ही परम सुख की भूमिका पर ले जाने की तमन्ना मात्र रखते थे वे। इसे प.पू. पप्पाजी कहते हैं– भगवत्स्वरूप संत की क्रिया चैतन्यलक्षी होती है, न कि हेतुलक्षी।

सो, प.पू. काकाजी का सच्चा साक्षात्कार दिन तो मनाया तभी माना जायेगा जब हम प्राप्ति की मस्ती में आनंदविभोर रहकर–अंतरज्योति को प्रकटा कर, प्रार्थना रूप अंजलि अर्पण करके, प्रशांत चित्त से साक्षीभाव में रहते हुए सहज आनंद की भूमिका में स्थिर रहते हो जायें ! यही उनका एक दिव्य संकल्प था.....**'तुम सब मूर्ति धारक हो जाओ, हरेक शुभ अशुभ क्रिया करने से पहले दो मिनट प्रभु की स्मृति करके ही करो....हरेक क्रिया में प्रभु का ही नमक डालो....'मैं किसकी घरवाली'....इस मस्ती में अखंड रहा करो।'**

प.पू. काकाजी अभी भी वैसे के वैसे ही हैं। गंगा के निर्मल प्रवाह की तरह शीतल, दीर्घ, गहन– उनकी हमारे प्रति की ममता में तनिक भी फर्क नहीं पड़ा। अब भी हम दिल से पुकार करते हैं तो वह सुनते ही हैं.....वह अजोड़, अनुपम, वात्सल्य आदर्शरूप मूर्ति आज भी हमारी अंतरात्मा की साक्षी बनकर हमें रास्ता दिखाने हमारे हृदय में बैठकर रोशनी दे ही रही है। पर अब हम गाफिल न बने–उस रोशनी को पहचाने। चाहे कैसा भी देशकाल आये... विपरीति संजोग आये–मन के ज्वारभाटे भी परेशान करते हों, पर तब भी हमारी निष्ठा, श्रद्धा, विश्वास में तनिक भी भावफेर न आये।

प.पू. काकाजी मेरे हैं व मैं इनका हूं

वह जो करेंगे मेरे हित में ही करेंगे व

सर्व कर्ता-हर्ता सर्वोपरि वही है.....

यह तीन चीजें दिल की सच्चाई से मानकर जीने का दृढ़ संकल्प करें यही 'साक्षात्कार दिन' पर गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना !!!

डॉ. महेन्द्रभाई दवे का अक्षरवास.....

प.पू. काकाजी महाराज व सभी गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता के पात्र–दिल्ली गुजराती समाज के सक्रिय कार्यकर्ता, गुणातीत समाज के अनन्य निष्ठावान सेवक व 'भगवत्कृपा' के मानद् सह-सम्पादक प.भ. महेन्द्रभाई दवे 27-12-88 को अक्षरनिवासी हुए....महाराज के पास जाकर बैठे... ! समग्र गुणातीत समाज के साथ एक अद्भुत आत्मीयता से जुड़कर अविरत सेवा करके उन्होंने स्वयं का जीवन धन्य किया व सर्व गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता प्राप्त की। प.पू. काकाजी उन्हें 'शेर दिल' कहा करते थे। सभा में खूब बलभरी बातें करते तब सब सत्संगियों में एक उमंग-उत्साह उमड़ पड़ता। गुणातीत समाज उनकी अविरत सेवा, भक्ति भावना को कभी भूला नहीं पायेगा व उत्सवों में भी उनकी कमी सभी महसूस करेंगे। गुणातीत स्वरूपों उनके परिवार जनों को खूब बल दें यही दिल की प्रार्थना।

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	2.2.89	गुरुवार	एकादशी, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
2.	दि.	3.2.89	शुक्रवार	ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन
3.	दि.	10.2.89	शुक्रवार	वसंत पंचमी, शिक्षापत्री जयंती, ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन
4.	दि.	14.2.89	मंगलवार	नवमी
5.	दि.	16.2.89	गुरुवार	एकादशी, व्रत
6.	दि.	20.2.89	सोमवार	पूर्णिमा

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7229327
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110032